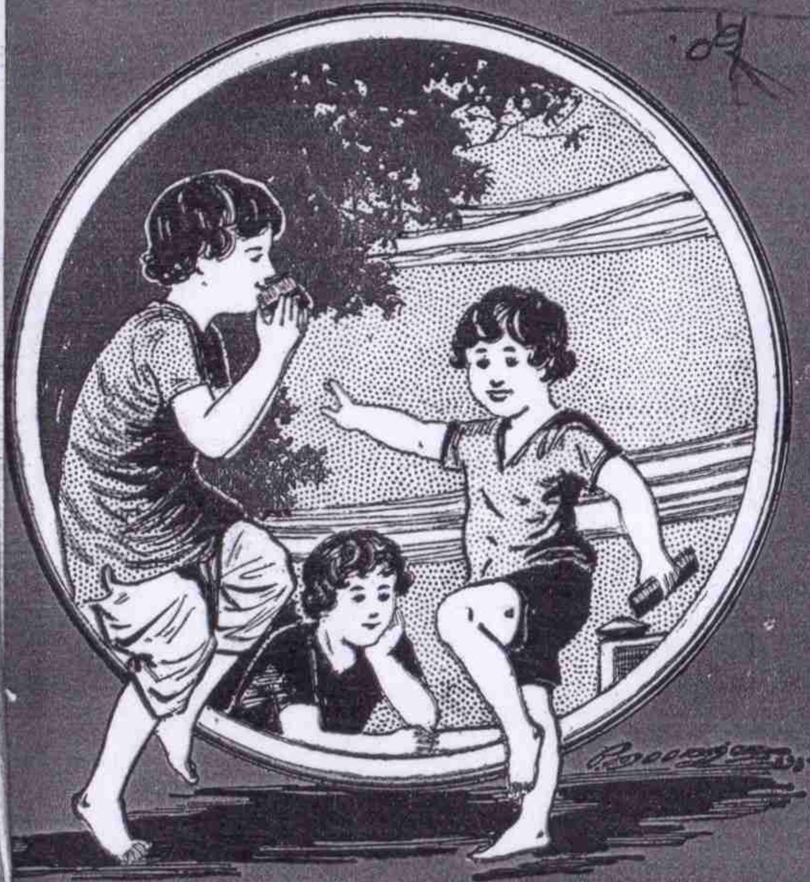
# पिपहरी



# पिपिहरी

लेखक

श्रीनाथसिंह

प्रकाशक

साहित्य-भवन लिमिटेड,

इलाहाबाद।

प्रथमावृत्ति } अक्तूबर, १९३४ { मूल्य ।)

प्रकाशक—
साहित्य-भवन लिमिटेड,
इलाहाबाद ।

मुद्रक—
गिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव
हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग ।

## विषय-सूची

---

# पिपिहरी

## हवा के झोंकों से

बहो, हवा के झोंको आओ ।
झर झर कर पत्तों पर गाओ ॥
पूर्व दिशा में जब हो लाली ।
जागे जंगल की हरियाली ॥
तब तुम मेरे ताज़े मन में ।
भर दो फूलों की खुशहाली ॥
दूर दूर की खबरें लाओ ।
मेरे कानों में कह जाओ ॥

## आम

घर में मेरे आये आम।
बड़े मजे ले आये आम॥
मुन्नू चुन्नू चम्पा चन्दो, सब ने मिलकर खाये आम।
बिन दाँतों की मुन्नी से हैं, उठते नहीं उठाये आम॥
गली गली में छाये आम।
मजे बड़े ले आये आम॥
आँधी आई टूटे आम, लड़कों ने मिल लूटे आम।
देखो ज़रा सँभल कर चूसो, कहीं न दब कर फूटें आम॥
ओ हो कपड़े रँगे तमाम।
मजे बड़े ले आये आम॥

## जुड़वाँ की मुसीबत

एक साथ जनमे हम दोनों मैं औ' मेरा भाई।
किन्तु शकल-सूरत मिलने से बेहद आफ़त आई॥

मैं हूँ कौन ? कौन है भैया समझ न कोई पाता।
जाता यदि वह नहीं मदरसे तो मैं ही पिट जाता॥

भाई का ले नाम मुझे थे घर के लोग बुलाते।
पड़ता वह बीमार, दवाई लेकिन मुझे पिलाते॥

धोखे में आ मात-पिता ने भी की भूल घनेरी।
भाई से ब्याहा उसको जो होती दुलहिन मेरी॥

क्या बतलाऊँ मुसीबतें क्या पड़ीं शीश पर पट पट।
भाई जब मर गया मुझी को लोग ले गये मरघट॥

## यदि मैं होता !

यदि मैं होता बन का तोता,
कभी न पिंजड़े में .खुश होता ।
यदि मैं होता घर का घोड़ा,
कभी न पड़ता मुझ पर कोड़ा ।

यदि मैं होता नभ का बादल,
कभी न दलदल को देता जल ।
यदि मैं ओस-बूँद बन पाता,
कभी न छूते ही गल जाता ।

सुन ये बातें बोली नानी,
कभी न करती मैं शैतानी ।
यदि मैं होती बालक तुझ-सा,
प्यारा चाँद न होता मुझ-सा ।

## बरात

मुन्नू मुन्नू छत पर आ जा !
बजने लगा द्वार पर बाजा ॥
पीं पीं पीं पीं ढम ढम ढम ढम !
खिड़की पर से देखेंगे हम ॥

ओहो आतिशबाजी छूटी ।
फुलवारी-सी नभ में फूटी ॥
ऊँचा खूब उठा गुब्बारा ।
हो मानो वह लाल सितारा ॥

हाथी घोड़े ऊँट खड़े हैं ।
जिन पर लोग चढ़े अकड़े हैं ॥
दिखलाई देते हैं ऐसे ।
मेले की हों चीज़ें जैसे ॥

हुई रोशनी कैसी भाई ।
चकचौंधी आँखों में आई ॥
कई कई परछाईं लेकर ।
चलते हैं सब चकित हमें कर ॥

चारों तरफ मची है हलचल ।
अम्मा ! ज़रा सड़क पर तो चल ॥
देखें कैसा दूल्हा आया ।
कैसा उसने मौर बँधाया ॥

## नानी का कम्बल

नानी का कम्बल है आला ।
देख उसे क्यों डरे न पाला ॥
ओढ़ बैठती है जब घर में ।
बन जाती है भालू काला ॥

रात अँधेरी जब होती है ।
ओढ़ उसे नानी सोती है ॥
तो मैं भी डरता हूँ कुछ कुछ ।
मुन्नी भी डर कर रोती है ॥

पर बिल्ली है ज़रा न डरती ।
खुश हो, म्याऊँ-म्याऊँ करती ॥
फिर चुपके आ इधर-उधर से,
उछल-उछल कम्बल से लड़ती ॥

कहीं मदारी यदि आ जाये ।
कम्बल को पहिचान न पाये ॥
तो यह डर है डम डम करके ।
पकड़ न नानी को ले जाये ॥

## बेवकूफ़ गुड़िया

ऊब गई हूँ गुड़िया से मैं,
कहा नहीं यह करती है।
कितनी ही आँखें दिखलाऊँ,
कुछ भी किन्तु न डरती है ॥

नहीं शऊर ज़रा भी इसको,
कहने को है लिखी-पढ़ी।
कल दुपहर जब खाने बैठी,
कपड़ों पर ली गिरा कढ़ी ॥



पड़ा मुझी को धोना उसको,
बड़ी दूर के टब लाकर।
पास उसी के कुर्सी पर वह,
गुड़िया भी बैठी आकर ॥

जब मैं कपड़े लगी सुखाने,
छप छप कुछ बोला जल में।
पीछे फिर कर देखा तो,
पाया उसको गायब पल में ॥

भीग गई रेशम की साड़ी,
गालों पर काजल फैला।
मैले पानी में डुबकी खा,
सारा बदन हुआ मैला ॥

मर जाती यदि दौड़ न मुन्नी,
खींच उसे लेती टब से।
देखो इस गुड़िया के पीछे,
परेशान हूँ मैं कब से ?

## बिल्ली

१

ओ री बिल्ली बड़ी चिबिल्ली।
क्या तू ने देखी है दिल्ली॥
क्यों करती है म्याऊँ म्याऊँ।
क्या मैं चला यहाँ से जाऊँ॥

२

आँगन में घर में छप्पर पर।
देखा तुझे लगाते चक्कर॥
पेड़ों पर भी चढ़ जाती तू।
नहीं पकड़ में है आती तू॥



३

सीख अगर यह मैं भी जाता।
तो मुन्नी को खूब छकाता॥
मैं भगता वह पकड़ न पाती।
हाथ जोड़ तब मुझे बुलाती॥

४

आ! आ! दूध पिलाऊँ तुझको।
जो खा खूब खिलाऊँ तुझको॥
तुझे कहूँगा बिल्ली रानी।
सुनना घर में बैठ कहानी॥

५

साथ हमारे चलकर पढ़ना।
वहाँ न पर छप्पर पर पढ़ना॥
नहीं गुरुजी चिढ़ जायेंगे।
तुझे पीटने को धायेंगे॥

# काँटा

पड़ा राह में काँटा पाओ ।
उसे उठा लो सँग ले जाओ ॥
तो वह दिन बीतेगा सुख से ।
रह रह फूल झड़ेंगे मुख से ॥



पड़ा राह में काँटा पाओ ।
छोड़ वहीं पर उसको आओ ॥
तो वह दिन बीतेगा दुख से ।
निकल पड़ेंगे मेंढक मुख से ॥

औ' यदि मानो बात हमारी ।
जो है बुरी ; किन्तु है प्यारी ॥
तो वह काँटा सँग ले आओ ।
बिस्तर में झट उसे छिपाओ ॥

बस कुछ देर बाद हे प्यारे,
शब्द सुनोगे न्यारे न्यारे ॥
"माँ-माँ माँ-माँ, मरा-मरा रे !
बिस्तर में है डङ्क भरा रे !"

अन्त उसे पायेगा कोई ।
फेंक उसे आयेगा कोई ॥
फिर जो राही चिल्लायेगा ।
वह उस काँटे को पायेगा ॥

## मक्खी की निगाह

कितनी बड़ी दीखती होंगी,
मक्खी को चीज़ें छोटी।
सागर-सा प्याला भर जल,
पर्वत-सी एक कौर रोटी॥
खिला फूल गुलगुल गद्दा-सा,
काँटा भारी भाला-सा।
ताला का सूराख़ उसे,
होगा बैरगिया नाला-सा॥
हरे-भरे मैदान की तरह,
होगा इक पीपल का पात।
भेड़ों के समूह-सा होगा,
बचा-खुचा थाली का भात॥
ओस-बूँद दर्पण-सी होगी,
सरसों होगी बेल समान।
साँस मनुज की आँधी-सी,
करती होगी उसको हैरान॥

## सब से प्यारी गुड़िया

हैं मेरे बहुतेरी गुड़ियाँ,
काली गोरी छोटी मोटी।
कोई उनमें है अति सीधी,
कोई उनमें है अति खोटी॥१॥

पर उन सारी गुड़ियों में है,
एक बहुत ही हाय पुरानी।
जिसे गोद में लेते ही है,
आँखों में भर आता पानी॥२॥

है शरीर ही शेष रहा अब,
हाथ-पाँव मुन्नू ने तोड़े।
यत्न किया बहुतेरा मैंने,
किन्तु जा सके ज़रा न जोड़े॥३॥

उसके बाल सुनहले थे सब,
थी वह भी जब नई-नवेली।
सब गुड़ियों से बढ़ कर थी तब,
प्यारी मुझको वही अकेली॥४॥

किन्तु एक दिन कीचड़ में जा,
गिरी अचानक वह सुकुमारी ।
गीली मिट्टी की पुतली सी,
निकली सन कीचड़ से सारी ॥५॥

अब न रहे वे बाल सुनहले,
दूर हुई गालों की लाली ।
और एक दिन मौका पाकर,
नाक कुतर चूहों ने डाली ॥६॥

एक आँख भी नहीं रही है,
पर यह पूसी का क़सूर है ।
इससे क्या, उसके सुन्दरता,
का मुझको अब भी गरूर है ॥७॥

प्यार किया है जिसे एक दिन,
उसे न आज भुलाऊँगी मैं ।
सब गुड़ियों से ऊँचे आसन,
पर उसको बिठलाऊँगी मैं ॥८॥

## दोनों पैसे

दोनों पैसे पड़े जेब में
करते हैं खन-खन खन-खन ॥
'इन पैसों का क्या मँगवाऊँ ?'
कहता मुन्नू मन ही मन ॥
उसके मन का भाव जान कर
मुन्नी यों बोली हँस कर—
'जाती हूँ बाज़ार आज मैं
बन कर सुन्दर सौदागर ॥
भैया मुन्नू ! क्या तुमको भी
है कुछ बोलो मँगवाना ?'
दिया एक पैसा मुन्नू ने
कह कर—'घोड़ा ले आना ॥'
'घोड़ा ! अजी, एक पैसे में
घोड़ा कैसे आवेगा ?
जिससे माँगूगी वह ही
पागल मुझको ठहरावेगा ॥'
'तो यह ले जा दोनों पैसे
पर कोड़ा भी ले आना ।
नहीं राह में कहीं मिठाई
छिपकर इनकी खा जाना ॥'

# अनोखी दावत

शादी है गुड़िया की मेरी,
दावत है दुनिया भर को।
सिर्फ़ मनाही है दो जन को,
मुन्नू को औ' बन्दर को ॥



इस प्रकार जब मुन्नी अपने,
घर में बैठ लगी गाने।
जिसको देखो वही चला तब,
मुँह मटका दावत खाने ॥

सहज नहीं है यह बतलाना,
कौन-कौन उस दिन आये।
आईं नभ की सारी चिड़ियाँ,
थल के सारे चौपाये ॥

जल-जीवों की भी न कमी थी,
दावत बड़ी निराली थी।
मन्नी की मीठी बातों ने,
अजब मोहनी डाली थी ॥

बिना बुलाये ही आये थे,
मुन्नू औ' बन्दर दोनों।
कोशिश में थे किसी तरह से,
जा पहुँचें अन्दर दोनों ॥

पर दरवाज़े पर बैठा था,
शेर, इसी से डरते थे।
महक सूँघ कर पकवानों की,
ठण्डी आहें भरते थे ॥

बन्दर बोला मुन्नू से
'गुड़िया को चलो उठा लायें।'
मुन्नू बोला बन्दर से—'पर,
किस प्रकार अन्दर जायें॥'
जहाँ शेर था वहीं टँगा था,
मुन्नी का प्यारा तोता।
बन्दर मुन्नू की बातें सुन,
बोला वह भी ख़ुश होता—
'चलो उठा लायें गुड़िया को,
पर कैसे अन्दर जायें।
चलो उठा लायें गुड़िया को,
पर कैसे अन्दर जायें'॥
सुन तोते की ऐसी बातें,
कहा शेर ने निज मन में।
आदर होगा अगर करेंगे,
पालन यह आज्ञा छन में॥
ग़ुर्राता वह भीतर दौड़ा,
भय खाकर भागे सब जन।
पकड़ उठा लाया बेचारी—
गुड़िया को बाहर फ़ौरन॥



अब तो अति मुन्नी घबड़ाई,
और शेर के आई पास।
हाय दुष्ट क्यों किया हमारा,
तू ने एकदम सत्यानाश॥
जभी शेर ने खोला अपना,
मुँह कुछ देने को उत्तर।
गुड़िया गिरी भूमि पर—
जिसको ले भागा तुरन्त बन्दर॥
साथ उसी के दौड़ा मुन्नू,
दोनों कहीं छिपे जाकर॥
इधर शेर ग़ुस्से में झपटा,
उस तोते के पिंजड़े पर॥
अब तो डर कर भाग गये सब,
भूल गये दावत खाना।
सोच-समझ कर मुन्नी ने फिर,
गाया इस प्रकार गाना॥
शादी है गुड़िया की मेरी
पर दावत वह पावेगा।
मुन्नू को औ' बन्दर को जो
अभी पकड़ कर लावेगा॥

## चोटी का सेठ

एक चीन में सौदागर था
बहुत बड़ी थी उसकी चोटी ।
उसे लपेट-लपेट कमर में
था वह लेता बना लँगोटी ॥
उसकी चोटी में फँस-फँसकर
गिर जाते थे अगणित राही ।
इससे सड़कों पर चलने की
थी उसको हो गई मनाही ॥



पर वह घर में बैठे-बैठे
भी उत्पात मचाता था ।
फँस कर गिरते वायुयान थे
चोटी अगर उड़ाता था ॥
उस चोटी को कटवाते
सरकार हमेशा डरती थी ।
क्योंकि तुरत ही बढ़कर वह
बेकार यत्न सब करती थी ॥
उसका लड़का चतुर बड़ा था,
उसने था मन में ठाना ।
खुल सकता है इस चोटी के
बल पर बड़ा कारख़ाना ॥
बस, वह बोला मौक़ा पाकर
बप्पा मेरी मानो बात ।
कम्बल, लोई और दुशाले
क्यों न बनायें हम दिन-रात ॥
बात चतुर बेटे की फ़ौरन
बुड्ढे सौदागर ने मानी ।
अब 'चोटी का सेठ' बना वह
दूर हुई उसकी हैरानी ॥

## जाड़ा

जाड़ा आया जाड़ा आया।
रंग-बिरंगे कपड़े लाया ॥
कम्बल, लोई और दुशाले।
फिर से बाहर गये निकाले ॥
गुलूबन्द मोजे दस्ताने।
नये नये मँगवाये माँने ॥
पहन रजाई का पैजामा।
सी सी करते आये मामा ॥
धूप लगी लड़कों को भाने।
आग लगी अति आदर पाने ॥
भगती भैंस देख अब पानी।
दिन चढ़ता तब उठती नानी ॥



नहीं भाड़ से अब घबड़ाता।
भड़भूजा है मौज उड़ाता ॥
मुर्गे से पहले चिल्लाते।
तड़के ही हैं बाबा गाते ॥
दिन होगया सिकुड़ कर छोटा।
गोभी फूल उठी ज्यों लोटा ॥
कमरख नारंगी झरबैले।
हैं अमरूद शरीफ़े फैले ॥
हरी घास धो-सी जाती है।
लाखों मोती बिखराती है ॥
उसमें सुबह न चलता कोई।
साबुन बहुत न मलता कोई ॥
कुहरा पड़ता ता पाला।
ओस भरा मकड़ी का जाला ॥
दिखता है इस तरह सुहाना।
ज्यों चाँदी का ताना-बाना ॥
उँगली तो जाती है अकड़ी।
क़लम नहीं जाती है पकड़ी ॥
बन्द करो अब लिखना भाई।
चलो धूप है छत पर छाई ॥

## होली के मज़े

होली आई होली आई,
छाई चहल-पहल घर में ।
आँख खुली तो देखा मैंने
नई सूरतें बिस्तर में ॥
चन्दनपुर के चाचा आये
दौलतपुर के दादा भी ।
सजधज छोटा भइया आया,
मात हुआ शहज़ादा भी ॥
मेरी दोनों 'दिदिया' आईं
लाईं खूब खिलौने साथ ।
इच्छा थी पर शरम के मारे
उनको नहीं झुकाया माथ ॥



चूल्हे पर चढ़ गई कढ़ाई
बास मिठाई की आई ।
भूख पेट में, हँसी होंठ पर,
तन में चंचलता छाई ॥
पड़ा सुनाई दूर गली में
बजता ढोल फाग होता ।
भइया निकला घर से बाहर
दिल में बाग बाग होता ॥
एक एक पर छोड़ रहे हैं,
भरी रँग से पिचकारी ।
साथी-सङ्गी लगा रहे हैं
अब अबीर बारी बारी ॥
लाल गुलाल लगा गालों पर
लाल हँसी हँसते सब जन ।
बैर-भाव सब भूल गये हैं
सब का एक हुआ है मन ॥
नयो इशारे करती भाभी
लाल अबीर लिए कर में ।
होली आई होली आई
छाई चहल-पहल घर में ॥

## गर्मी के मज़े

गर्मी के हैं मज़े निराले ।
गये मदरसों में लग ताले ॥
नहीं गुरू जी का अब डर है ।
खेल मचा अति पानी पर है ॥
काम सभी मनमाने होते ।
दिन दिन भर हम रहते सोते ॥
संध्या को घर से कढ़ते हैं ।
केवल 'बालसखा' पढ़ते हैं ॥
घंटों रोज़ नहाते हैं अब ।
छाया में सुख पाते हैं अब ॥
खाते खुश हो बरफ़-मलाई ।
पीते शरबत औ' ठंढाई ॥



है बहार आमों की आई ।
तरबूज़ों की हुई चढ़ाई ॥
गली-गली बिकता खरबूज़ा ।
छिपा पसीने में भड़भूजा ॥
पग पग पर दूल्हे सजते हैं ।
होते ब्याह, बैंड बजते हैं ॥
नित्य नई हम दावत पाते ।
दल-बल से हैं खाने जाते ॥
कभी कभी आँधी आती है ।
धूल गगन में छा जाती है ॥
झर-झर-झर-झर सर-सर-सर-सर ।
पेड़ उखड़ते उड़ते छप्पर ॥
आधी रात फूलता बेला ।
तारों का लग जाता मेला ॥
सुख से तब दुनिया सोती है ।
सपनों की वर्षा होती है ॥
गर्मी है इतनी सुखकारी ।
हाँ, पर एक ऐब है भारी ॥
लङ्का-सी पृथ्वी जलती है ।
जाने यह किसकी ग़लती है ॥

## सो जा

सो जा बच्चा सो जा छौना ।
गुलगुल गुलगुल बिछा बिछौना ॥
आँखें मूँद ले बीत गया दिन ।
है बढ़ रहा अँधेरा छिन छिन ॥
बन्द हुआ चिड़ियों का गाना ।
निकल रहा है चाँद सुहाना ॥
चमक रहे हैं चमचम तारे ।
सो जा बेटा सो जा प्यारे ॥
खिड़की पर है जगता तोता ।
दरवाजे पर कुत्ता सोता ॥
तेरे ऊपर माँ का कर है ।
सो जा नहीं किसी का डर है ॥

## सो जा गुड़िया

सूरज डूबा निकले तारे ।
घर के बिछे बिछौने सारे ॥
सो जा गुड़िया सो जा रानी !
आज कहूँगी नहीं कहानी ॥

जैसे माँ है मुझे सुलाती।
थपकी दे दे लोरी गाती॥
वैसे तुझे सुलाऊँगी मैं।
गीत निराले गाऊँगी मैं॥

आँख फाड़ क्या देख रही है।
गुपचुप क्या तू लेख रही है॥
क्या कानों की बाली मेरे।
लेने की है मन में तेरे॥

ओ हो अभी न ऐसा हठ कर।
रात हुई, है चोरों का डर॥
होने तो दे ज़रा सवेरा।
गहने ढँक देंगे तन तेरा॥

घड़ी देख तो दस बजता है।
असमय में कोई जगता है॥
सुन तो क्या कहते हैं दादा।
ठीक नहीं है जगना ज़्यादा॥

## चवन्नी की कथा

चाँदी की थी नई चवन्नी,
चमक रही ज्यों तारा।
देख उसे माता के कर में,
दौड़ा मुन्नू प्यारा॥
और उसे ले भगा किन्तु,
माता न तनिक भी बोली।
क्योंकि बड़ा प्यारा बैठा था,
सूरत भोली भोली॥

वहीं पिता जी पास खड़े थे,
हँसे देख यह लीला।
बेटा तो प्यारा है लेकिन,
है भारी ख़र्चीला॥
बोले—इसे ख़र्च कर सकते
हो, पर सोच-समझ कर।
पर मुन्नू भग गया बिना ही,
दिये उन्हें कुछ उत्तर॥
जब वह पहुँचा घर के बाहर,
लगा सोचने मन में।
सब से अच्छी चीज़ चवन्नी,
की क्या है त्रिभुवन में॥
नहीं चवन्नी में मिल सकता,
कोई बढ़िया बाजा।
मिलता तो मैं उसे बजाता,
बनता सब का राजा॥
हाथी-घोड़े मिल सकते हैं,
पर लकड़ी के केवल।
उन्हें करुँगा क्या लेकर मैं,
क्या होगा उनमें बल॥



बहुत चवन्नी की चीज़ें हैं,
जो सब को भाती हैं।
पर अफ़सोस न कोई मुझको,
याद आज आती हैं॥
पुस्तक ले लूँ? वह क्या होगी?
पढ़ना मुझे न भाता।
मज़ा मिठाई में है केवल,
ज़रा देर को आता॥
खा लेने पर गई चवन्नी,
हाथ हुआ फिर खाली।
और पतंग भी नहीं बहुत दिन
तक है चलने वाली॥
यों सोच में फिरता फिरता,
फिर वापस आया घर।
बड़ा कठिन है ख़र्च चवन्नी,
करना सोच-समझ कर॥

# सड़क

सड़क कहाँ से आती है तू ।
और कहाँ को जाती है तू ॥
कितना लम्बा है तेरा तन ।
देखे कितने हैं पहाड़-बन ॥

कितने देखे नगर निराले ।
पार किये कितने नद-नाले ॥
कितने तुझ पर लड़के खेले ।
कितने तूने देखे मेले ॥

क्या इसकी हो सकती गिनती ।
हो सकती तो है यह बिनती ॥
कुछ हमको भी बतला प्यारी ।
कहाँ बसे कैसे नर-नारी ॥

कौन कौन राजे-महराजे ।
तुझ पर चले बजाकर बाजे ॥
कितने तुझ पर फिरे भिखारी ।
कब कैसी थी दशा हमारी ॥



चलते-चलते थक जाते हैं ।
पार न हम तेरा पाते हैं ॥
ऐसा मनुज न मैंने पाया ।
जिसे न तूने सुख पहुँचाया ॥

सारी दुनिया है तेरा घर ।
फिर भी कहीं न पाती आदर ॥
पैरों की ठोकर खाती है ।
अक्सर तू कुटी जाती है ॥

इससे मैंने सोचा मन में ।
सीधा बन करके जीवन में ॥
बहुत कठिन है आदर पाना ।
क्या यह भेद न तूने जाना ॥

सीख लिया जिसने चुप रहना ।
उसको ही पड़ता सब सहना ॥
सड़क रहेगी सदा पड़ी क्या ।
हो सकती तू नहीं खड़ी क्या ॥

## वह मुख

जब मैंने वह मुखड़ा देखा।
दूर भगा सब दुखड़ा देखा॥
उस मुख की शोभा है न्यारी।
उसकी छवि है मुझको प्यारी॥
दुख में वह धीरज देता है।
मन की पीड़ा हर लेता है॥
ऐसा सुन्दर और सुहाना।
किसका मुख है? मुझे बताना॥
उसके बिना व्यर्थ सब सुख है।
वह मेरी माता का मुख है॥

## नाई और बन्दर

किसी गाँव में था इक नाई।
उसने अपनी नाक बढ़ाई॥
इससे वह नक्कू कहलाया।
पर न कहीं कुछ आदर पाया॥
लड़के उसको देख चिढ़ाते।
कह नक्कू नक्कू चिल्लाते॥

नहीं बाल बनवाता कोई ।
पास न उसके जाता कोई ॥
बड़ा हुआ पर हुई न शादी ।
घर की थी उसके बरबादी ॥
सूना उसको लगा ज़माना ।
भूला खाना और कमाना ॥
जहाँ बना था नक्कू का घर ।
रहता एक वहीं था बन्दर ॥
दोनों में हो गई मिताई ।
कहलाए वे भाई भाई ॥
बन्दर ने तब कपड़ा पहना ।
सीखा मनुज की तरह रहना ॥
रखवा चोटी मूड़ मुड़ाया ।
मानों सब तीरथ कर आया ॥
फिर वह लगा पीसने आटा ।
नहीं मिताई में है घाटा ॥

## चीन का सौदागर

एक चीन में सौदागर था,
बहुत बड़ी थी उसकी दाढ़ी ।
सिर्फ़ इसी से उस पर बच्चो,
थी आ पड़ी मुसीबत गाढ़ी ॥

ज़रा दूर चलने से भी वह,
उलझ बहुत पैरों में जाती ।
बेचारे बुड्ढे सौदागर–
को रस्ते में सदा गिराती ॥

जिधर जिधर से कढ़ता था वह ,
था झाड़ू-सा लगता जाता ।
दुनियाँ भर का कूड़ा-करकट ,
घर दाढ़ी में भर कर लाता ॥

लख कर उसकी ऐसी हालत ,
बोला उसका बेटा प्यारा–
एक पैरगाड़ी बनवाओ ,
मानो बप्पा कहा हमारा ॥

तीन लगे उसमें पहिए हों ,
हो अति ऊँचाई पर बैठक ।
बड़ी शान से चलना-फिरना ,
लोग रहेंगे लखते टकटक ॥

बात चतुर बेटे की फ़ौरन ,
बुड्ढे सौदागर ने मानी ।
राजा बन अब चलता है वह ,
दूर हुई उसकी हैरानी ॥

## पहेलियाँ

१

दस करती हैं दिन भर काम ।
दस का यों ही होता नाम ॥
बीसों रहतीं सब के साथ ।
देखो धर पैरों पर हाथ ॥

( अँगुलियाँ )

२

नहीं बैठता खाली छिन भर ।
चलता ही रहता है दिन भर ॥
ज्योंही करता वह आराम ।
हो जाता शरीर बेकाम ॥

( दिल )

३

बोझ लदै कपड़ों का तन पर ।
फिर भी नङ्गा घूमें दर दर ॥
शङ्ख बजावे खावे घास ।
गदहा, जिसे न हो विश्वास ॥

( गदहा

४

आसमान है नहीं, न बादल,
कैसी यह हैरानी है।
फिर भी दो तारे दिखते हैं,
और बरसता पानी है॥

( आँखें )

५

कोयल औ' कौए-सा काला।
गया आग में हूँ मैं पाला॥

( कोयला )

६

हड्डी है पर पेट न आँत।
हैं सारे शरीर में दाँत॥
लकड़ी ही खाना है काम।
फ़ौआरा में मेरा नाम॥

( आरा )